International Research Journal of Management and Commerce
ISSN: (2348-9766)
Impact Factor 5.564
Volume 5, Issue 2, February 2018
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asiaeditoraarf@gmail.com

वैदिक एवं लौकिक साहित्य में वाणभट्ट कृत हर्षचरितम का ऐतिहासिक विवेचन तथा मूल्यांकन

विनोद कुमार
शोधछात्र इतिहास
जय प्रकाश विश्वविद्यालय छपरा

वैदिक गध तथा लौकिक संस्कृत के गध को मध्यम में मिलाने का काम पौराणिक गध करता है। यह गध नितान्त आंलंकारिक तथा प्रासादिक है श्रीमद्भागवत तथा विस्णुपुराण का गध इसका स्पष्ट उदाहरण है। इनमें साहित्यिक गध का समग्र सौन्दर्भ विधमान है। उसमें विशेष गढबन्धता की कमी तथा भावाभित्यंजक है (विष्णु 0 1/13/4) शिलालेखो में उपलब्ध गध भी नितान्त प्रौद आलंकारिक तथा हृदयावर्जक है– (रूद्रदामन का गिरनार लेख 150ई0)।

हमने उपर इस गध की विशिष्टता का प्रदर्शन किया है। हमारे समग्रह दर्शन ग्रन्थ पध में ही लिखे गये है और उनमें अपने अर्थ प्रकटन की योग्यता सुचारू रूप से विधमान है परन्तु अर्थो की अभिव्यक्ति चरम लक्ष्य होने के कारण इन ग्रन्थकारो का ध्यान शब्दगत सौन्दर्य रखने की ओर कम गया है। शब्द रूखे–सुखे भले हो मनोगत भावो को प्रकट करना ग्रन्थकार है जिनका गध विशुद्ध साहित्यिक गध के समान रस पेशल तथा सुन्दर है। इन दार्शनिको की अपनी विशिष्ट शैली है। जिसका प्रयोग उन्होंने अपने ग्रन्थो में किया है। ऐसे शास्त्रकारो के कालक्रम से चार को चुना सकते है।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

(1) पंतजलि (2) शबरस्वामी (3) शंकराचार्य (4) जयन्तभट्। ये विद्वान अपने शास्त्र के महनीय अर्चाय है।

महर्षि पंतजलि की महाभास्य लिखने की शैली विलक्षण है वह व्याकरण का आकर–ग्रन्थ तो ही है साथ ही साथ अनेक शास्त्रों का पिण्डीभूत सिद्धान्त धोतक भी है। जान पड़ता है कि छात्र उनके सामने बैठे है और वे अपना सिद्धान्त उन्हें समझा रहे है। उनके गध की रमणीयता देखिए–

शबरस्वामी प्रौढ मीमांसक है जिन्होंने कर्म मीमांसा के सुत्रो पर अपना प्रसिद्ध भास्य लिखा। उनकी शैली भी सीधी–सादी तथा रोचक है (1/1/15) शंकराचार्य के गध की सुषमा निराली है उनके वाक्य सारगर्भित प्रौढ तथा प्रांजल है। वाचस्पति मिश्र जैसे विद्वान ने उसे यथार्थत प्रसन्न गंभीर कहा है। उनके गध में वीणा की मधुर झंकार सुनाई पड़ती है अर्थात पैरो से भागने में समर्थ व्यक्ति के लिए घुटने वल रेगना शोभा नही देता। अचार्य का गध मात्रा में भी अधिक है व्रहासुत्र, गीता तथा उपनिषदो का भास्य लिखना विशेष रचना–चातुर्थ का धोतक है। आर्चाय के गध की असामान्य सुषम नितंरा अवलोकनीय है –

जयन्तभट् न्यायशास्त्र के विख्यात आर्चाय है। इनकी नयाय–मंजूरी न्याय–दर्शन का प्रामाणिक ग्रन्थ है। इनका गध वडा ही सुन्दर सरस तथा प्राजल है। न्याय तो स्वभाव से ही कठिन ठहरा परन्तु इन्होंने उसे अपनी रोचक शैली से अत्यन्त हृदयगम वना दिया है। इनके गध में व्यग्य उक्तियां की काफी भरमार है। इनकी शैली का परिचय इस उद्धरण से भली–भांती लग सकता है।

वाणभट् के द्वारा प्रशंसित किये जाने के कारण ये वाण से पूर्ववर्ती सिद्ध होते है। इन्होंने एक श्लेष के द्वारा न्यायवार्तिक के रचयिता प्रसिद्ध नैयायिक उधोगकर का स्पष्टत संकेत किया है न्याय

स्थिति मिवोधोत कर स्वरूपाम। उधोतकर का समय षष्ठी शताब्दी का अन्त तथा सप्तम का आदि माना जाता है इस निर्देश से सुबन्धु का समय उधोतकर के अनन्तर होना चाहिये ऐतिहासिक गवेषणा उपयुक्त सामग्री के अभाव में समय का यर्थाथ निरूपण नही कर सकती है हर्षवर्धन (606–78 ई0) के समापण्डित होने वाण्भट् का समय 630–643 ई0 तक मानना उचित प्रतीत होता है। वाण से पूर्ववर्ती होने के कारण सुबन्धु का समय 600 ई0 के आसपास तथा पश्चाद्वर्ती होने के कारण दण्डी का समय 650 ई0 के बाद मानना उचित जान पड़ता है।

हर्षचरितम के आरंभिक अच्छवासो में वाण का आत्मवृत वर्णित है। उसके आधार पर उनके असामान्य व्यक्तित्व का एक रमणीय चित्र हमारे सामने प्रस्तुत है। वाणभट् के पूर्वज सोननद पर प्रीतिकूट नामक नगर में निवास करते थे वह स्थान सम्भवता बिहार प्रान्त के पश्चिमी भाग में था। वाण का कुल प्राचीन काल से ही धर्म तथा विधा के लिए प्रख्यात था।

इनका जन्म वाव्स्यायन गोत्र में हुआ था वाण के एक प्राचीन पूर्वज का नाम कुवेर था इनके घर पर वेदाध्ययन के लिए विधार्थियों का जमघट लगा रहता था। वाण ने तो कादम्वरी में यहा तक लिखा है कि उनके घर पर वहाचारी लोग शंकित होकर यजुर्वेद पड़ते तथा सामवेद गाया करते थे क्योंकि सव वेदो का अभ्यास करने वाले मैनाओ के साथ–साथ पिजड़ो में बैठे हुए तोते उनको पद–पद पर टोका करते थे कुवेर के चार पुत्रों में पशुपति सबसे छोटे थे उनके पुत्र अर्थपति हुए अर्थपति से चित्रभानु उत्पन्न हुए यह भी सकल शास्त्र में पण्डित थे चित्रभानु से वाण्भाट् का जन्म हुआ थोड़ी ही उम्र में वाण के माता तथा पिता उन्हें अनाथ इस असार संसार से चल बसे। वाणभट् के पास पैतृक सम्पति खूब थी किसी सुयोग्य

अभिभावक के न होने से वाण एक आवारा लड़का निकला कुछ साथियों के साथ वह देभाटन को निकला। बुद्धि–विकास सांसारिक अनुभव तथा उदार विचार कमा कर वह घर लौटा लोग उसका उपहास करने लगे अचार एक दिन हर्ष के चचेरे भाई कृष्ण के एक दूत ने आकर वाण को एक पत्र दिया पत्र में लिखा था कि श्रीहर्ष से कितने लोगो ने तुम्हारी चुगली खाई है। राजा तुमसे नाराज हो गये है। अतएव शीघ्र यहा चले जाओ वाण श्रीहर्ष के पास गये राजा ने पहले तो वाण की अवहेलना की परन्तु पीछे उनकी विद्वता पर प्रसन्न होकर वाण का आश्रय दान दिया वाण ने बहुत दिनों तक हर्ष की सभा को सुभोभित किया अनन्तर अपने घर लौटे आये और लोगों के हर्ष का चरित पूछने पर वाण ने हर्षचरितम की रचना की।

हर्षचरित – में आठ उच्वास है प्रथम उच्वास के आरंभ में ग्रन्थकार ने श श्लोक बनाये है। जिनमें कतिपय सामान्य बातों के अनन्तर व्यास वासवदता, भट्टार हरिश्चन्द्र सात वाहन प्रवरसेन भास, कालिदास, वृहत्कथा जैसे मान्य कवियों तथा ग्रन्थों की प्रशस्त स्तुति है यह वर्णन कवियो के समय निर्देशन के लिए नितान्त महत्वशाली है। ये समस्त ग्रन्थ और ग्रन्थकार सप्तम शताब्दी से पूर्ववर्ती है शुरू के तीन उच्छवास वाण की संक्षिप्त जीवनी का वर्णन करते है और इस प्रकार आत्मकथा के परिचायक है। इनमें वात्स्यायन वंश में जन्म पूर्वजो का चरित वाण का नाना सांगियो के साथ देश–देशान्तर में भ्रमण तथा प्रत्यावर्तन आदि प्रथम उच्छवास में वर्णित है। दुसरे उच्छवसास में हर्ष के भाई कृष्ण का लेखहारक मेखलक वाण को हर्ष के पास चलने का निमंत्रण देता है। जिसे स्वीकार कर वाण अपने गांव से चलकर तीन पड़ावो के वाद अजिरवती के तट पर मणितारा गांव में पड़ी छवनी में जाकर श्रीहर्ष से भेट करता है और उसका प्रेम तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है तृतीय उच्छवास में वाण घर लौट

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**

आता है और अपने चचेरे भाईयो के कहने पर हर्ष को चरित कहने बैठता है।

चतुर्थ उच्छवास में वंश के संक्षिप्त वर्णन के अनन्तर राजाधिराज प्रभाकरवर्धन तथा उनकी महिषी श्रीमती यशोमती का वर्णन है तथा इनके प्रथम पुत्र राज्यवर्धन की जन्मकथा बड़े विस्तार तथा रोचकता के साथ वर्णित है अनन्तर हर्ष तािा राज्यश्री के जन्म का अति–विस्तृत वर्णन है यशोमती का भाई अपने पुत्र भंडि को राजकुमारो का साथी बनाता है मौखरी ग्रहवर्मा के साथ राज्यश्री का विवाह बड़े ठाटवाट से तथा राजसी वैभव के साथ सम्पन्न होता है पंचम उच्छ्वास से राजकुमारो की विजयगाथा आरंभ होती है हुणो के जीतने के लिए राज्यवर्धन हर्ष तथा सेना के साथ प्रस्थान करता है हर्ष शिकार खेलने के लिए आता है और पिता की असाध्य बीमारी का हाल सुनकर राजधानी लौट आता है। प्रभाकर वर्धन की मृत्यु से पूर्व ही यशोमती सती से हो जाती है और मृत्यु के अनन्तर समस्त प्रजा महान शोक से संतप्त हो जाती है।

षष्ठ उच्छ्वास में राज्यवर्धन के लौटने तथा पिता द्वारा हर्ष को राज्य देकर स्वय छुटकारा पाने का प्रथमत वर्णन है। ग्रहवर्मा की मृत्यु तथा मालव–नरेश द्वारा राज्यश्री को बंदी बनाना सुनकर उसका प्रतिकार करने के लिए राज्यवर्धन अकेले ही जाता है वह मालव नरेश को तो परास्त करता है परन्तु गौईश्वर शशांक के हाथ स्वय मारा जाता है। हर्ष इसका बदला लेने की गंभीर प्रतिक्षा करता है।

सप्तम उच्छ्वास श्रीहर्ष के दिग्विजय का रोचक वर्णन प्रस्तुत करता है। वह अपनी विपुल सेना के साथ दिग्विजय के लिए प्रस्थान करता है इसी समय प्राग्ज्योतिषेश्वर भास्करवर्मा का दूत हंसवेग अनेक प्रकार की भेट तथा मैत्री का संदेश लेकर आता है। हर्ष सेना के साथ विन्धय प्रदेश में पहुँचता है तथा मालवराज पर विजयी होता

है भंडि मालव राज की सेना तथा खजाने पर अधिकार करता है अष्टम उच्छ्वास में हर्ष एक शवर युवक की सहयता से अपनी बहिन राज्यश्री को खोजने का प्रयास करता है जो कारागृह से निकलकर विन्धय के जंगल में इतस्तत भटकती है। वह बौद्ध भिक्षु दिवाकरमित्र के आश्रम में पहुचता है जहा एक भिक्षु आग में जलने के लिए तैयार किसी विपत्र स्त्री का पता देता है। हर्ष वहा जाकर अपनी बहन को समझा–बुझा कर दिवाकरमित्र के आश्रम में ले जाता है जो राज्यश्री का हर्ष के अनुसार जीवन यापन की शिक्षा देता है। हर्ष भी सूचित करता है कि दिग्विजय–विषयक प्रतिक्षा की पूर्ति होने पर वह स्वयं राज्यश्री के साथ ही गेरूआ वस्त्र धारण कर लेगा।

हर्षचरितम के इस क्रमिक सरांश से स्पष्ट पता चलेगा कि वह कोई आधुनिक ढ़ंग का रूखा सुखा घटनाप्रधान इतिहास नही है प्रत्युक विशुद्ध साहित्यक शैली में निवद्ध एक रोचक वर्णनात्मक प्रबन्ध–काब्य है। इसीलिए यह काव्यात्मक आख्यायिक अपने विशिष्ट काव्यप्रकार का आदर्श मानी जाती है। सामान्य रीति से वीररस की प्रधानता है परन्तु करूणरस के उन्मेष में भी वाण ने अपनी लेखनी को सिद्ध लेखनी दिखलाया है।

हर्षचरितम इस काव्यवैभव के लिए ही प्रख्यात नही है प्रत्युत वह सप्तम शती के भारत का एक अत्यन्त उज्जवल तथा प्रमाणिक चित्र खीचता है। हर्ष जीवन की घटनावली ज्ञात इतिहास से कही भी अनमोल नही जमती। उस युग की सांस्कृतिक उन्नति का यह परम परिचायक ग्रन्थ रत्न है इसकी सहायता से हम उस काल की वेष–भूषा आचार–विचार सेवा के प्रकार तथा प्रयाग की कला का जीता–जागता चित्र पाते है राज्यश्री के विवाह के अवसर पर शिल्पियो ने अपने अनुरूप जो भुषणसज्जा तैयार की है वह कला की दृष्टि से अनुपम है। इसी प्रसंग में नाना प्रकार के वाधनू की रंगाई के कपड़ो

का वर्णन ही रोचक ज्ञानवर्धक तथा सांस्कृतिक है इस दृष्टि से हर्षचरितम का मूल्य तथा महत्व ऐतिहासिको के लिए बहुत ही अधिक है।

संदर्भ सूची :–

1. वाणभट् और कालिदास – वालमणि अहणुवालिया
2. भारत के इतिहास – डॉ0 सुधरी कुमार शुक्ल
3. वाणभट् की आत्मकथा – डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास – वलदेव उपाध्याय
5. वाणभट् – डॉ0 रमेशचन्द्र साह
6. वाणभट् – भूमीनाथ ओझा
7. राज्यश्री – जयशंकर प्रसाद